राज्य अध्याय 30

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **नीतिवचन 6,7,8 और 10**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (नीतिवचन 6,7,8 और 10) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर की महानता)*** **श्रृंखला 'ञ' का पुनरावलोकन करें**

"परमेश्वर की महानता"। दो-दो करके श्रृंखला ञ का ***पुनरावलोकन करें।***

(1) परमेश्वर अतुल्य है। यशायाह 40:25-26. इसलिये तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूं? उस पवित्र का यही वचन है। अपनी आँखें उठाकर देखो, किसने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन-गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह समार्थी और अत्यन्त बलवन्त है कि उसमें से कोई बिना आए नहीं रहता।

(2) परमेश्वर महिमामय है। 1इतिहास 29:11. हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान् ठहरा है।

(3) परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है। इफिसियों 1:11-12. उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों।

(4) परमेश्वर सर्वज्ञानी है। इब्रानियों 4:13. सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन् जिस से हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रगट हैं।

(5) परमेश्वर सर्व-शक्तिमान है। यिर्मयाह 32:17. हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़ी सामर्थ्य और चढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 8:1-17**

s

परिचय। **रोमियों 8:1-17** का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों अध्याय 1–5 में पौलुस धर्मी ठहरने की स्थिति को वर्णित करता है और इसे स्पष्ट करता है कि व्यवस्था धर्मी ठहरने को सुनिश्चित नहीं कर सकती। रोमियों अध्याय 6–7 में वह पवित्रता की स्थिति का और शुद्धिकरण की प्रक्रिया का वर्णन करता है और इस बात को स्पष्ट करता है कि व्यवस्था शुद्धिकरण को भी उत्पन्न नहीं कर सकती। अध्याय 8 में पौलुस मसीहियों के उद्धार की निश्चिता और अश्वासन की व्याख्या करता है।

मसीहियों का उद्धार, जो पिता परमेश्वर द्वारा प्रसतावित किया गया, पुत्र मसीह द्वारा प्राप्त किया गया, पवित्र आत्मा द्वारा लागू किया गया और सुसमाचार में घोषित किया गया (रोमियों 1:16), बिल्कुल निश्चित है (प्रत्याभूत है)!

मसीहियों का उद्धार सुनिश्चित है, क्योंकिः

- उन्हें पाप के प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली पापमय स्वभाव की सामर्थ्य से छुडाया गया है (रोमियों 8:1–4)।
- वास्तव में उनक उद्धार उनके नए जीवन और पवित्र आत्मा द्वारा उनके हृदय और जीवन के शुद्धिकरण में शुरू हुआ (रोमियों 8:5–13)।
- वे परमेश्वर की संतान और भविष्य की महिमा के वारिस हैं (रोमियों 8:14–17)।

कदम 1.पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 8:1–17तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक–एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2.खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आप के लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आप के मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हम ने क्या सीखा है।

(याद रखेंः हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

8:1–4

खोज 1. **मसीही सुरक्षित हैं क्योंकि उन्हें पाप के प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली पापमय स्वभाव की सामर्थ्य से छुडाया गया है।**

जबकि यूहन्ना 5:24 वादा करता है कि अंतिम न्याय के दिन मसीहियों को *दोषी नहीं ठहराया जाएगा,* रोमियों 8:1 वादा करता है कि मसीही *नाश नहीं होंगे (अनंत विनाश का दण्ड)* (तुलना करें मत्ती 25:46 से)! ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही मसीह में असीमित दोष और विश्वासियों पर प्रभुत्व करने वाली पापमय सामर्थ्य को कमज़ोर मानवीय स्वभाव में दडिंत किया (रोमियों 8:3)। पवित्र आत्मा ने मसीहियों को पाप के प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली पापमय स्वभाव की सामर्थ्य से छुडा लिया है (रोमियों 8:2)।

व्यवस्था न्याय (उद्धार) के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है और परमेश्वर के जीवन को जीने के लिए नैतिक कर्तव्यों की सूची परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं) में है। लेकिन मनुष्य को धर्मी ठहराना (उद्धार) व्यवस्था के लिए असंभव है क्योंकि मनुष्य के पापी स्वभाव के द्वारा व्यवस्था को शक्तिहीन बना दिया गया। मनुष्य के पापमय स्वभाव ने व्यवस्था का पालन करने को असंभव बना दिया।

जो व्यवस्था नहीं कर सकी, वह परमेश्वर ने यीशु मसीह के माध्यम से किया! परमेश्वर ने यीशु मसीह को उसी कमज़ोर स्वभाव (पाप के बिना) में भेजा और यीशु मसीह के कमज़ोर मानव शरीर में पाप और उसकी समार्थ्य को क्रूस पर दंड़ित किया (1पतरस 2:24) (रोमियों 8:13)। परमेश्वर ने पाप का प्रायश्चित व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा नहीं किया, बल्कि हमारे स्थान पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा किया। इस प्रकार केवल धर्मी ठहरना ही नहीं बल्कि शुद्धिकरण भी संभव हो सका और यीशु समीह पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए वास्तविकता बन गया।

धर्मी ठहरने और शुद्धिकरण के लिए व्यवस्था धार्मिक मांग परमेश्वर की आज्ञा और इच्छा के प्रति 100प्रतिशत आज्ञाकारी होने और लोग जिस प्रकार जीते हैं उसमें 100 प्रतिशत सिद्धता से कुछ कम नहीं। आदम का कोई भी वंशज कभी इस मांग को पूरा नहीं कर सका! लेकिन यीशु मसीह ने इस मांग को हर उस व्यक्ति के लिए पूरा किया है जो उस पर विश्वास करता है!

लोग पापमय स्वभाव की समानता में नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के अनुरूप जीवन जीने के द्वारा इस बाता का प्रमाण देते हैं कि वे यीशु मसीह के वास्तविक विश्वासी हैं। जीवन की आत्मा एक मसीही के जीवन में नई सामर्थ्य के रूप में काम करती है। मसीह की आज्ञाकारिता और परिणामस्वरूप शुद्धिकरण नए जन्म् पर शुरू होता है (प्रेरितों 5:32; 1पतरस 1:2) और केवल उस समय विश्वासी यीशु मसीह को आमने सामने देखते हैं (1यूहन्ना 3:1-3)। पवित्र आत्मा लगातार विश्वासियों को शुद्ध करता रहेगा जब तक कि वे अपने वर्तमान शरीर से आजाद नहीं हो जाते जिसमें पापी स्वभाव और मृत्यु विनाश का कारण बनती है (रोमियों 7:24-25; 1कुरिन्थियों 15:54-57) (रोमियों 8:4)।

8:5-13

खोज 2. **मसीही सुरक्षित हैं, क्योंकि उनका उद्धार नए जन्म् और उनके हृदय और जीवन के शुद्धिकरण में पवित्र आत्मा द्वारा वास्तव में शुरू हो गया है।**

(1) मसीही पवित्र आत्मा के अनुरूप जीवन जीते हैं।

क्योंकि मसीहियों को उनके पापमय स्वभाव की नियंत्रित करने वाली और प्रभुत्व करने वाली सामर्थ्य से छुड़ाया गया है, वे अपने जीवन को पापमय स्वभाव के अनुरूप नहीं (जो अभी भी वर्तमान वास्तविकता है), बल्कि पवित्र आत्मा के अनुरूप जीते हैं (गलातियों 5:16-26)। मसीहियों के पास पवित्र आत्मा है, पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन जीने के परिणामस्वरूप पवित्र आत्मा का मन प्राप्त होता है। ''आत्मा का मन'' आत्मा की मनोवृत्ति द्वारा सोचने का तरीका है। इसका अर्थ है कि मसीहियों के पास आत्मा के विचार और मनोवृत्ति है; उनके पास चीजों को देखने का वही दृष्टिकोण है जो आत्मा का है; उनके पाप वही लक्ष्य, महत्वाकांक्षा और भूख है जो आत्मा के पास है! मसीही अपने मन को आत्मा की बातों पर लगाते हैं, अर्थात, वे अपनी रूचियों और लक्ष्यों को बार-बार उन चीजों के प्रति निर्देशित करते हैं जो पवित्र आत्मा उन्हें प्रस्तावित करता और अनुमति देता है और जिससे द्वारा परमेश्वर की महिमा होती है।

आत्मा का मन ऐसे ''जीवन'' (अनंत जीवन) के रूप में व्यक्त होता है, जो परमेश्वर को जानता और परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति रखता है (यूहन्ना 17:3)। साथ ही इसका परिणाम ''शान्ति'' होता है जो इन बातों का आंतरिक आश्वासन है:

- *भूतकाल* के पापों को क्षमा कर दिया गया (रोमियों 5:1)
- *वर्तमान* बुराई को भलाई के लिए खारिज कर दिया गया (रोमियों 8:28)
- *भविष्य* में होने वाली घटनाएँ मसीहियों को परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:31-39)!

(2) गैर–मसीही अपने पुराने स्वभाव के अनुरूप जीवन जीते हैं।

गैर–मसीहियों के पास आत्मा नहीं है, वे लागातार अपने पापमय और भ्रष्ट स्वभाव की अधीनता में जीते हैं और अपनी रूचियों और लक्ष्यों को भ्रष्ट और सांसारिक चीजों की ओर निर्देशित करते हैं। गैर–मसीहियों के लिए स्वयं को आत्मिक, नैतिक और शारीरिक रूप से परमेश्वर के अधीन करना असंभव है, क्योंकि उनका सोचने का तरीका, संसारिक दृष्टिकोण और मनोवृत्ति पूर्ण रूप से परमेश्वर के विरूद्ध है। गैर–मसीही स्वयं को बाइबल के परमेश्वर के अधीन न करते हैं और न कर सकते हैं। वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

इस स्थिति का परिणाम ''मृत्यु'' होता है, जिसका अर्थ है, परमेश्वर से अलगाव, यहाँ तक कि नियमित रूप से परमेश्वर का विरोधी होना, जीवन में अपवित्रता और अधार्मिकता के विरूद्ध सामर्थहीनता और अंततः अनंत दुःख (रोमियों8:5–8)। वे लोग जिनके पास पवित्र आत्मा नहीं होता वे अपने पापमय स्वभाव के द्वारा शासित और नियंत्रित होते है। ऐसे लोग मसीही नहीं हो सकते! हालाँकि जिन लोगों के पास पवित्र आत्मा होता है वे पवित्र आत्मा के द्वारा शासित और नियंत्रित होते हैं। ऐसे लागों में जीवित परमेश्वर का आत्मा या मसीह का आत्मा उनके अंदर रहता है। या इसे दूसरे शब्दों में कहें तो ऐसे लोगों के अंदर यीशु मसीह रहते हैं और वे लोग यीशु मसीह के ही होते हैं (रोमियों 8:9–10 अ)!

(3) मसीही उनमे रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा पहचाने जाते हैं।

उनके पापमय स्वभाव की विघटनकारी सामर्थ्य के बावजूद, जो अभी भी उन में काम करती है, मसीही उनमें रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा पहचाने जाते हैं। क्योंकि पापमय स्वभाव मसीहियों की देह में अभी भी कार्यरत है, मसीहियों की *शारीरिक देह* का मरने के लिए अभिशप्त है। लेकिन, क्योंकि मसीहियों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है, मसीहियों की *मानव आत्मा* में पहले ही अनंत जीवन है। पवित्र आत्मा ने मनुष्य की आत्मा को हमेशा के लिए जीवित कर दिया है और इस बात की खातरी देता है कि उनकी देह भी मुर्दो के पुनरूत्थान में जी उठेगी (तुलना करें फिलिप्पियों 3:21 से)। पवित्र आत्मा का अंदर रहना उसके उद्धार की *शुरूआत* की शर्त और अंत में मुर्दो में से जी उठने पर उद्धार के पूर्ण होने की जमानत है (रोमियों 8:10ब–11; इफिसियों 1:13–14)!

(4) मसीहियों का एक दायित्व है।

इसलिए मसीहियों का परमेश्वर के प्रति एक दायित्व है। वे अब अपने पापमय स्वभाव के अनुरूप जीवन जीने के लिए बाधित नहीं है। जो लोग स्वयं को मसीही समझते हैं, और पापमय स्वभाव के अनुरूप जीवन जीते हैं, वे परमेश्वर के अनंत जीवन के वारिस नहीं होंगे, बल्कि अंतन मृत्यु के भागी होंगे। वास्तविक मसीही पवित्र आत्मा के चलाए चलते हैं और वे अपने पापमय स्वभाव के बुरे कामों को, जो उनकी देह के अंगो में काम करता है, मार डालेंगे। वास्तविक मसीही अपनी पापमय अभिलाषाओं, उद्देश्यों, लक्ष्यों इच्छओं इत्यादि को अपने अन्दर रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा बार–बार मार सकते हैं, और मारेंगे (रोमियों8:12–13)।

8:13–17

खोज 3. **मसीही सुरक्षित हैं क्योंकि वे परमेश्वर की संतान और भविष्य की महिमा के वारिस हैं।**

वे मसीही जो सक्रिय रूप से अपने अनंद रहने वाले पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलते हैं वे ''जीवित परमेश्वर की वास्तविक संतान (पुत्र और पुत्रियाँ) हैं''!

मसीही बनने से पहले उनके पास दासत्व की आत्मा थी जो उन्हें भयभीत करती थी स्वामियों, दण्ड़ और अस्वीकृति के द्वारा (गलातियों 3:23–4:7)। वे ''अपरिपक्व बालकों के समान अभिभावकों और संरक्षकों के अधीन थे'', अर्थात् ''व्यवस्था और मानव निर्मित नियमों के'' (''संसार के मूल सिद्धांत'')।[1]

[1]संसार के मूल सिद्धांत (धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक आदि।) वे सिद्धांत हैं जिनका पालन गैर–मसीही करते हैं। यहूदी तोरह का, नाममात्र मसीही व्यवस्था का, मुस्लिम शरयत का, हिंदू पूजा का, और साम्यवादी अपने घोषणा पत्र का पालन करते हैं।

हालाँकि मसीही बनने के बाद, उनके पास ''लेपालकपन की आत्मा है (पुत्रत्व)'' (यूनानीः न्यूमा हुयोथिसिस) मिली है, अर्थात्, पवित्र आत्मा जिसने उन्हें परमेश्वर के घराने में दास से परिपक्व पुत्रों (और पुत्रियों) में बदल दिया! भय की जगह पवित्र आत्मा उनके हृदयों में बाइबल के परमेश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है और वह उनमें लगातार ''परमेश्वर की संतान या परिपक्व पुत्रों'' के चरित्रगुणों का निर्माण करता है। वे इस बात के प्रति आश्वस्त हैं कि परमेश्वर ने उन्हें पूर्णरूप से स्वीकार कर लिया है (तुलना करें इफिसियों 1:5 से) और उनका परमेश्वर के साथ ''उनके स्वर्गीय पिता'' के रूप में व्यक्तिगत और घनिष्ठ संबंध है।

परमेश्वर के पित्रत्व का पृथ्वी के पित्रत्व से कोई संबंध नहीं, जहाँ पिता शरीरिक बच्चे पैदा करते हैं। परमेश्वर का पित्रत्व एक पूर्ण आत्मिक अवधारणा है। परमेश्वर लोगों को ''आत्मिक रूप से नया जन्म्'' देते हैं और उनके साथ *आत्मिक* रीति से ही संबंध रखते हैं!

पवित्र आत्मा स्वयं ही मसीहियों की मानव आत्मा के साथ मिल कर यह गवाही देता है कि वे परमेश्वर की वास्तविक (आत्मिक) संतान हैं और वे भविष्य के सिद्ध संसार के ''परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ संगी वारिस है''। पवित्र आत्मा मसीहियों को उद्धार का आत्मनिष्ठ आश्वासन प्रदान करता है (हृदय में) (रोमियों 8:16) जिस प्रकार बाइबल में परमेश्वर का प्रकाशन उद्धार का वस्तुनिष्ठ आश्वासन प्रदान करता है (तुलना करें रोमियों 16:25-26 से)। संसार में मसीहियों का वर्तमान सताव (उनका उत्पीड़न और दमन) भविष्य की महिमा के लिए अपरिहार्य मार्ग है (रोमियों 8:17)!

कदम 3.प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 8:1-17 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

8:1-4

प्रश्न 1. **क्या ''दोष लगाना'' केवल पाप की दोष भावना को संदर्भित करता है, या फिर पाप से छुटकारे कि सामर्थ्य को भी?**

ध्यान दें।

(1) रोमियों 8:1-4 का अनुवाद।

पद 1. ''इसलिए जो मसीह में है उन पर दण्ड (यूनानीः कटकरिमा) (दण्ड जिसमें शामिल हैः दण्ड के योग्य ठहराना, न्याय की कार्यवाही करना, नाश होने के लिए भेजना) की आज्ञा नहीं। पद 2. क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में (''प्रभुत्व करने के सिद्धांत'' के अर्थ में) तुम्हें (यूनानीः ''मुझे'' के स्थान पर ''तुम्हें'') *एक बार में हमेशा के लिए* (अनिर्दिष्टकाल) पाप और मृत्यु (अर्थात् सामर्थी पापमय स्वभाव) की व्यवस्था (''प्रभुत्व करने के सिद्धांत'' के अर्थ में) से स्वतंत्र कर दिया।

पद 3. क्योंकि जो काम व्यवस्था (उद्धार के लिए परमेश्वर की आवश्यकता और परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं के अनुसार जीने के अर्थ में) शरीर के कारण दुर्बल (अर्थात् पापमय स्वभाव जैसा पापियों में होता है) होकर न कर

सकी, उसको परमेश्वर ने किया अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में (यूनानीः इन होम्योमॉटी सरकोस हमारटिऑस) (एक मनुष्य की समानता में एक कमज़ोर स्वभाव के साथ) (तुलना करें फिलिप्पियों 2:7 से) और पापबलि (यूनानीः पेरी हमारटिऑस) (अर्थात्, पाप को दूर करने के उद्देश्य से या पाप के प्रायश्चित के लिए) होने के लिए (अनिर्दिष्टकाल) भेज कर शरीर में (अर्थात्, यीशु मसीह की मानवीय शरीर जो कि लोगों के शरीर के समान ही था, केवल पाप को छोड़ कर) (इब्रानियों 4:15) पाप (उसकी दोष भावना, दण्ड और सामर्थ्य) पर दण्ड (क्रूस पर नाश करने के लिए) (1पतरस 2:24: तुलना करें फिलिप्पियों 2:8 से) की आज्ञा दी।

पद 4. इसलिए कि व्यवस्था की विधि (परमेश्वर की धर्मिक और पवित्र आवश्यकता के अर्थ में) हम में जो शरीर (पापमय स्वभाव) के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं (जीते) (नियमित वर्तमानकाल), पूरी की जाए।''

पहला शब्द ''इसलिए'' पिछले संदर्भ की ओर संकेत करता है। लेकिन कौन सा संदर्भ? सबसे अच्छी व्याख्या यह है कि यह तत्काल संदर्भ की ओर संकेत करता है रोमियों 6:1–7:25 और विशेषरूप से रोमियों 7:14–25 की ओर। पौलुस पाप की भावना और पाप की सामर्थ्य दोने से छुटकारे के विषय में सोच रहा है और विनाश या दण्ड से, जो दोनों लाते हैं। पौलुस यह निष्कर्ष निकालता है कि बिना धर्मी ठहरे शुद्धिकरण नहीं हो सकता। एक सच्चा मसीही नियमित रूप से अपने शरीर के अनुसार नहीं चल सकता!

(2) नाश ऐसे दण्ड को संदर्भित करता है जिसका घोषणा कर दी गई हो।

इस संदर्भ में ''नाश'' शब्द का अर्थ केवल पाप के दोष के लिए सजा *सुनाना* ही नहीं है, बल्कि पाप के दोष और पाप की सामर्थ्य के विरूद्ध निर्णय देने के द्वारा पाप के दण्ड को *लागू करना भी है!* रोमियों 5:18, 1कुरिन्थियों 11:32, 2पतरस 2:6 में पापमय और अभक्तिपूर्ण संसार के लिए दण्ड का समान अर्थ है। दण्ड की घोषणा हो चुकि है और दण्ड लागू हो चुका है (परमेश्वर के वर्तमान न्याय में)! विनाश अतं में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर पूर्ण किया जाएगा। यह पापमय संसार और अभक्तिपूर्ण लोगों पर मसीहियों की निश्चित विजय का प्रतिपादन करता है!

जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह नाश नहीं होगा! वह अनंत विनाश (नरक) के लिए नहीं भेजा जाएगा! यह मसीहियों की पापमय और भ्रष्ट स्वभाव की सामर्थ्य है जिसे *एक बार में हमेशा के लिए* नाश किया जाएगा। इसका विनाश शुरू हो गया है (नए जन्म्, धर्मी ठहरने और शुद्धिकरण के साथ) और यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर पूर्ण (महिमा के साथ) हो जाएगा! मुर्दो के पुनरूत्थान के समय मसीहियों की कमज़ोर (नाशवान, मिटने वाली) शारीरिक देह (''शरीर'' यानि पापमय स्वभाव के साथ) एक महिमामय शरीरिक देह (महिमावान और निर्दोष आत्मा के साथ) में बदल जाएगी। यह मसीहियों की निश्चित वर्तमान ''पवित्रता की स्थिति'' (पवित्र जीवन के प्रति समर्पित और पवित्र जीवन जीने की योग्यता) का प्रतिपादन करता है!

(3) पापमय स्वभाव में पाप का नाश व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकता को पूर्ण करता है। (रोमियों 8:4)। मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के काम के द्वारा, परमेश्वर ने मसीहियों के पाप और पापमय स्वभाव की समर्थ्य का नाश किया ताकि मसीहियों के जीवन में व्यवस्था की धार्मिकत आवश्यकता *एक ही बार में हमेशा के लिए* पूरी हो जाए। ''व्यवस्था'' हैः

- उद्धार के लिए परमेश्वर की पूर्ण आवश्यकता (प्रायश्चित, मेलमिलाप और धर्मी ठहरना)
- आज्ञाकारिता के परमेश्वर के पूर्ण नियम कि मसीहियों के कैसे जीना चाहिए (शुद्धिकरण)
- न्याय और दण्डादेश का परमेश्वर का पूर्ण मानक
- जैसा कि परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं में व्यक्त किया गया है

इस प्रकार परमेश्वर की व्यवस्था धर्मी ठहरने (उद्धार) के लिए परमेश्वर की स्थिति और शुद्धिकरण के लिए परमेश्वर का लक्ष्य, दोनों को प्रकट करती है और यह 100प्रतिशत सिद्धता से कुछ भी कम नहीं! यीशु मसीह ने हर उस व्यक्ति के लिए धर्मी ठहरने (उद्धार) की इस शर्त और शुद्धिकरण के इस लक्ष्य को (पाप से अलगाव और पवित्र जीवन के लिए समर्पित) पूरा कर दिया है जो उस पर विश्वास करता है! जिस क्षण एक व्यक्ति यीशु मसीह में विश्वास करता है, परमेश्वर उसे पूर्णरूप से धर्मी और पूर्ण रूप से शुद्ध मानते हैं। ''मसीह यीशु हमारे लिए परमेश्वर कि ओर से ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म और पवित्रता और छुटकारा'' (1कुरिन्थियों 1:30)! इसलिए एकमात्र घमंड़ जो मसीही कर सकते हैं, वह है मसीहियों के स्थान पर यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार और शुद्धिकरण के काम पर। ''जो घमंड़ करे, वह प्रभु में घमंड़ करे'' (1कुरिन्थियों 1:31)!

क्योंकि यीशु मसीह पहले ही मसीहियों के शुद्धिकरण की सिद्ध स्थिति प्राप्त कर चुके हैं इसलिए मसीहियों के जीवन में शुद्धिकरण की प्रक्रिया संभव और निश्चित है! मसीहियों के शुद्धिकरण में परमेश्वर के नैतिक नियमों के अनुसार जीवन जीना शामिल है। पवित्र आत्मा के भीतर रहने और नियंत्रण के द्वारा, मसीहियों को परमेश्वर के नैतिक नियामों के अनुसार जीना *चाहिए,* वे जी *सकते हैं* और *जीएँगे।* मसीहियों का शुद्धिकरण अब सम्भव है, एक वर्तमान वास्तविकता और भविष्य में पूर्ण और सिद्ध वास्तविकता है! इस तरीके से, मसीहियों के जीवन में ''परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकताएँ पूर्णरूप से पूरी की गई हैं''! इस सत्य को दूसरे तरीके से देखें: परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकताएँ यीशु मसीह के मारे जाने और पुनरूत्थान के द्वारा सिद्ध रूप से पूर्ण की गई है और अब यीशु मसीह की आत्मा के द्वारा लागू की गई है जो मसीहियों में और मसीहियों के द्वारा रहता है (तुलना करें गलातियों 2:20 से)!

8:1–4

प्रश्न 2. **''आत्मा की व्यवस्था'' और ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था'' क्या संदर्भित करते हैं?**

ध्यान दें।

(1) आत्मा की व्यवस्था पवित्र आत्मा को संदर्भित करती है
और पाप और मृत्यु की व्यवस्था पापमय स्वभाव को संदर्भित करती है।

रोमियों 7:21,23,25, के आधार पर ''व्यवस्था'' शब्द की सबसे अच्छी व्यख्या है, ''प्रभुत्व करने वाली सामर्थ्य'', ''पूर्ण शासन करने वाला सिद्धांत''। ''पवित्र आत्मा'' मसीहियों में व्यवस्था या पूर्ण प्रभुत्व करने वाला सिद्धांत है। इस प्रकार, ''पापमय स्वभाव'' गैर–मसीहियों में पूर्ण प्रभुत्व करने वाला सिद्धांत है और यह अभी भी मसीहियों के पुराने स्वभाव में एक शक्तिशाली सिद्धांत या बल है। पापमय स्वभाव को ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था कहा गया है'', क्योंकि यह लोगों में हर प्रकार के पाप के पीछे काम करने वाली सामर्थ्य और हर उस चीज का आधार है जो मृत्यु की ओर ले जाती है।

गैर–मसीहियों में केवल एक ही प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली सामर्थ्य है, अर्थात उनका पापमय स्वभाव और यह हर प्राकर से मृत्यु के फल को उत्पन्न करता है (तुलना करें गलातियों 5:19–21)। और गैर–मसीही कुछ नहीं कर सकते, केवल पापमय स्वभाव की मांगो का पालन करने को छोड़ कर।

हालाँकि, मसीहियों में दो विपरीत बल हैं: पाप और मृत्यु की व्यवस्था (उनका पापमय स्वभाव) और आत्मा की व्यवस्था (पवित्र आत्मा)। उनका पापमय स्वभाव अभी भी एक उग्र शक्ति (रोमियों 7:14–25) और भयानक विरोधी है (गलातियों 5:17)। लेकिन सिद्धांत में उनका पापमय स्वभाव एक हारी हुई और अस्थायी सामर्थ्य है, जो केवल उन्हें उनकी शारीरिक मृत्यु तक ही संक्रमित कर सकती है (1कुरिन्थियों 15:54–57)।

(2) मसीहियों को एक नया और शुद्ध जीवन जीना *चाहिए* और वे जी *सकते हैं* और जीएंगे।

जिस प्रकार रोमियों 6:7 धर्मी ठहरने के कानूनी आधार को संदर्भित करता है, रोमियों 8:3-4 शुद्धिकरण के कानूनी आधार को संदर्भित करता है। यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के काम द्वारा पापमय स्वभाव की दोष भावना का मूल्य एक बार में हमेशा के लिए चुका दिया गया (रोमियों 3:24-25; तुलना करें 1पतरस 1:18-19)। पापमय स्वभाव की सामर्थ्य यीशु मसीह के पूर्ण किए गए उद्धार के काम द्वारा नाश कर दी गई है (रोमियों 6:6-7)। इस विनाश की शुरूआत मसीहियों में रहने वाले पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा पहले ही हो चुकि है।

यदि नया जन्म् पाए हुए मसीही पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा का अनुसरण कर सकते हैं, तो वह पूर्ण रूप से पाप की सामर्थ्य और इसके प्रदूषण से स्वतंत्र हो सकते हैं! हालाँकि प्रत्येक मसीही में शरीरिक मृत्यु तक पापमय स्वभाव जारी रहता है, इसलिए इस पृथ्वी पर कोई भी मसीही पूर्ण और सिद्ध रूप से पाप की सामर्थ्य, पाप के प्रदूषण और पाप की उपस्थिति से स्वतंत्र नहीं है। केवल शारीरिक मृत्यु के बाद ही एक मसीही पूर्णरूप से पाप की सामर्थ्य, पाप के प्रदूषण और यहाँ तक कि पाप की उपस्थिति से स्वतंत्र होगा!

फिर भी, क्योंकि मसीह की मृत्यु ने एक बार में हमेशा के लिए मसीहियों को पाप की सामर्थ्य से छुड़ा लिया है (रोमियों 6:2,7) और क्योंकि पवित्र आत्मा इस वास्तविकता को उनके जीवन में लागू कर रहा है (रोमियों 8:2), इसलिए मसीहियों को चाहिए की वे आत्मा का अनुसरण करें और पापमय स्वभाव (शरीर) का अनुसरण न करें (रोमियों 8:4)! हो सकता है कि एक मसीही हर समय पाप पर विजय न पाए, लेकिन वह निश्चित रूप से हर समय पाप से नहीं हारेगा। मसीहियों को बार-बार शरीर के बुरे कामों को मारना चाहिए वे ऐसा कर सकते हैं और करेंगे (रोमियों 8:13) और उन्हें बार-बार अपने मन को पवित्र आत्मा की इच्छा की ओर केंद्रित करना चाहिए और वे ऐसा कर सकते हैं और करेंगे (रोमियों 8:5)।

8:12-14

प्रश्न 3. **क्या रोमियों 8:13अ एक चेतावनी है या एक प्रोत्साहन?**

ध्यान दें। रोमियों 8:13 में, पौलुस कहता है, "यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे।" क्या यह एक चेतावनी है कि मसीही अपनी अनंत सुरक्षा को खो सकते हैं या फिर जिम्मेदारियों का अभ्यास करने का एक प्रोत्साहन?

यह एक प्रोत्साहन है कि मसीहियों को पापमय स्वभाव को नष्ट करना चाहिए। दायित्व के अधीन, मसीहियों की एक जिम्मेदारी है! उनकी जिम्मेदारी है कि वे पापमय स्वभाव के अनुसार नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा की अंदरूनि उपस्थिति के अनुसार चलें।

- मसीहियों को अपने पापमय स्वभाव को *बर्दाश्त* नहीं करना चाहिए!
- मसीहियों को अपने पापमय स्वभाव को *बदलने* की कोशिश नहीं करनी चाहिए!
- मसीहियों को अपने पापी स्वभाव के *कुकर्मों* को मारना चाहिए!

ये कुकर्म उनके भौतिक शरीर में व्यक्त किए गए है! उन्हें बार-बार हर प्रकार के उन बुरे कामों को उखाड़ फेंकना चाहिए, जो प्रकट होने के लिए शरीर का प्रयोग करते हैं (रोमियों 6:13,19)। मसीही ऐसा कर सकते हैं और ऐसा करेंगे जब वे पवित्र आत्मा के अनुसार जीएगें। या इसे दूसरे शब्दों में कहें तो, जब वे मसीह को उसके आत्मा के द्वारा जो उन में रहता है, अनुमति देंगे तो, वह इन पापों को उनके जीवन से जड़ से उखाड़ फेंकेगा।

इन कथनों के द्वारा, पौलुस मसीहियों की सुरक्षा को खारिज नहीं करता। वह इस बात पर जोर देता है कि केवल एक तरीका है जिसके द्वारा मसीही अपने अनंत उद्धार के प्रति सुनिश्चित हो सकते हैं (अपने मन, विवेक और भावनाओं में), अर्थात् जब वे पवित्र आत्मा के अनुसार जीवन जीते हैं! एक–गैर मसीही और एक नाममात्र मसीही जो अपने पापमय स्वभाव के अनुसार जीता है, कभी भी अपने उद्धार के प्रति सुनिश्चित नहीं हो सकता![2]

8:14–16

प्रश्न 4. **मसीहियों को क्या विश्वास दिलाता है कि वे परमेश्वर की संतान है?**

ध्यान दें। दो चीजें मसीहियों को यह विश्वास दिलाती हैं कि वे परमेश्वर की संतान हैः

(1) परमेश्वर के प्रति प्रेम की भावनाएँ साबित करती हैं कि मसीही परमश्वर की संतान हैं।

मसीही बनने से पहले लोगों के पास ''बंधवाई या दासत्व'' की आत्मा होती है। ''दसत्व की आत्मा'' वह आत्मा है जिसमें उन्हेंः स्वामी का भय, समाज के द्वारा अस्वीकृति का भय और दण्ड का भय होता है।

लेकिन, जब लोग मसीही बनते हैं (नया जन्म् प्राप्त करते हैं), वे पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं जिसे ''लेपालकपन का आत्मा'' कहते हैं। लेपालकपन का आत्मा वह आत्मा होता है जो घर के बालकों के पास होता हैः परमेश्वर के प्रति प्रेम का आत्मा, एक पिता के रूप में परमेश्वर के साथ घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबंध का आत्मा और गहन अनुभूति की परमेश्वर ने उन्हें अपनी स्वयं की संतना (पुत्र और पुत्रियों) के रूप में स्वीकार किया है! पवित्र आत्मा विश्वासियों में परमेश्वर के प्रति प्रेम की भावना, बालकों के समान आत्मविश्वास कि वे परमेश्वर के परिवार के हैं और परमेश्वर की संतानो के चरित्रगुण उत्पन्न करता है। (तुलना करें इफिसियों 1:5,14 से)।

(2) मसीहियों के हृदयों में पवित्र आत्मा की गवाही इस बात को साबित करती है कि वे परमेश्वर की संतान हैं।

पवित्र आत्मा बार–बार मसीहियों की आत्मा के साथ यह गवाही देता है कि वे वास्तव में परमेश्वर की संतान हैं। वह वास्तव में मसीहियों के नवीनीकृत मन, विवेक और हृदयों में इस बात की पुष्टि करता और आश्वासन देता है कि वे परमेश्वर की संतान हैं। पवित्र आत्मा नियमित रूप से मसीहियों को बाइबल में परमेश्वर की प्रतिज्ञा स्मरण कराता है और वह उन्हें इस बात का गहन आश्वासन देता है कि परमेश्वर स्वयं उन्हें अपनी संतान के समान प्रेम करते हैं (तुलना करें रोमियों 8:39 से)।

8:17

प्रश्न 5. **मसीही किस संमंध में मसीह के साथ ''संगी वारिस'' हैं?**

ध्यान दें।

(1) मसीही लोग मसीह की महिमा को साझा करते हैं।

इस वर्तमान संसार में मसीही कोई स्थायी मिरास प्राप्त नहीं करते। लेकिन भविष्य में, वे मसीह की महिमामय मिरास को साझा करेंगे, जिसमें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से कुछ भी कम नहीं। मसीह देह (कलीसिया) का सिर होने के नाते और मसीही उसकी देह होने के नाते संगी वारिस हैं! मसीह ने इस मिरास को प्राप्त (अर्जित) किया है, लेकिन मसीही इस मिरास को उसके साथ साझा करते हैं।

---

[2] यही कारण है कि यहूदी, मुस्लिम, नाममात्र के मसीही और अन्य धर्मों के अनुयायियों को कभी भी यह अश्वासन नहीं होता कि उनका उद्धार होगा!

(2) मसीही यीशु मसीह की महिमा को साझा करने के लिए उसके दुःखों मे सहभागी होते हैं।

मसीही और यीशु मसीह केवल *भविष्य* की महिमामय मिरास को ही साझा नहीं करते बल्कि वर्तमान दुःखों को भी साझा करते हैं। परमेश्वर की अनंत योजना में मसीही, उसकी महिमा को साझा करने से पहले मसीह के दुःखों को साझा करेंगे! मसीहियों के दुःख को ''मसीह के क्लेश'' कहा गया है (कुलुस्सियों 1:24), लेकिन क्रूस पर मसीह के पापों से छुटकारें के लिए उठाए दुःखों के अर्थ में नहीं।

मसीही समान्य अर्थ में सताव, क्लेश और जीवन के दुःख साझा करते हैं जिन्हें यीशु ने ''दुःखी पुरूष'' के रूप में सहा जब वह इस पृथ्वी पर था। साथ ही मसीही इस संसार में सामान्य रूप से कमज़ोरी, बीमारी, अयोग्यता, आपदाओं, युद्धों, जुर्म के परिणामों और दूसरों के पापों, परिस्थितियों की कठिनाइयों, टूटे रिश्तों, निराशा, बेरोजगारी, गरीबी, हताशा आदि में को भी साझा करते हैं। संक्षेप में, मसीही इस पतित और गिरे हुए संसार के क्लेशों को साझा करते हैं, जिसमें मसीह ने जन्म् लिया था।

लेकिन साथ ही मसीही, मसीही विश्वास और यीशु मसीह के विरूद्ध विशेष क्लेशों और सताव को भी साझा करते हैं। समीही, यीशु मसीह और उसके नाम के कारण दुःख उठाते हैं (मरकुस 8:34-38)। मसीहियों को क्लेश और सताव के प्रति वैसे ही प्रत्युत्तर देना चाहिए जैसे यीशु ने दिया (1पतरस 2:18-23)। यह क्लेश कई प्रकार से वर्तमान युग में यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक जारी रहेंगे। मसीहियों के सताव में परमेश्वर का उद्देश्य अपने न्याय की मांग को संतुष्ट करना नहीं, बल्कि मसीहियों को भविष्य में अपनी महिमा को साझा करने के लिए तैयार करना है! वर्तमान दुःख *परिष्कृत करने की वह प्रक्रिया* है जिससे मसीहियों को होकर गुजना है (तुलना करें 1पतरस 1:6-7)। मसीह की महिमा को अंत में साझा करने के लिए दुःख उठाना आवश्यकत शर्त है।

चरण 4. लागू करना। अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 8:1-7 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)
(याद रखेंः प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. **रोमियों 8:1-17 से सम्भव अनुप्रयोगों के उदाहरण।**

8:1 इस बात को समझें की आप नाश, दंड़ित और अभिशप्त नहीं होंगे क्योंकि आप मसीह में हैं।

8:2-3 इसे स्वीकार करें कि पवित्र आत्मा अब आपके जीवन और मानव आत्मा में प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली सामर्थ्य है, क्योंकि मसीह ने पहले ही आपके पापमय (अपवित्र) स्वभाव को नाश होने के लिए अभिशप्त कर दिया है।

8:4 विश्वास करें की यीशु मसीह ने पहले ही आपके स्थान पर परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकता को पूर्ण कर दिया है। मसीह में आपकी स्थिति (पदवी) पूर्णरूप से धार्मिकता और पवित्रता कि है (1कुरिन्थियों 1:30)। इसलिए आपको शुद्धिकरण की प्रकिया में बढ़ना चाहिए, आप बढ़ सकते हैं और बढ़ेंगे।

8:5 इस बात को समझें कि इस संसार में सोचने के दो ही तरीके हैं। गैर–मसीही लगातार इस बात को सोचते हैं कि आपने पापमय स्वभाव की भ्रष्ट इच्छाओं को किस प्रकार संतुष्ट करें। मसीही बार–बार अपने लक्ष्य को उन चीजों की ओर केंद्रित करते हैं, करना चाहिए और करेंगे, जो परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं।

8:7–8 इस बात को समझें की एक व्यक्ति बिना पवित्र आत्मा के अपने आप कों स्वयं के प्रयासों से परमेश्वर और परमेश्वर की इच्छा के अधीन नहीं कर सकता। यहाँ तक कि वह अपनी स्वयं की इच्छा और प्रयासों से भी अपने आप को परमेश्वर और परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित नहीं कर सकता। जब तक वह पवित्र आत्मा से न जन्में वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता (यूहन्ना 3:3–8; 6:44)।

8:9 विश्वासी बिना पवित्र आत्मा के मसीही नहीं हैं।

8:9–10 इस बात को स्वीकार करें कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के आत्मा या मसीह के आत्मा से कुछ भी कम नहीं। परमेश्वर एक है। इस सत्य को यदि दूसरे शब्दों में कहें तो, इस बात को समझें कि यीशु मसीह आत्मा के द्वारा विश्वासी के हृदय में रहता है।

8:10–11 इस बात को समझें की यद्यपि आपकी शरीरिक देह को मरना है, पवित्र आत्मा जिसने आपकी मानव आत्मा को जिलाया है, वह आपकी शरीरिक देह को भी जीवित करेगा।

8:12–13 प्रत्येक मसीही का यह दायित्व है कि वह आपने पापमय स्वभाव के अनुसार न जीए, बल्कि शरीर के पापमय स्वभाव और मन के भ्रष्ट कामों को आत्मा के द्वारा मारे।

8:14–15 विश्वास करें कि अब आप पापमय स्वभाव के दास नहीं है, बल्कि अब आप परमेश्वरकी संतान हैं। विश्वास करें कि पवित्र आत्मा आपके हृदय (रोमियों 5:5) में परमेश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है और स्वर्गी पिता के रूप में परमेश्वर के साथ आपको एक व्यक्तिगत और घनिष्ठ संबंध प्रदान करता है।

8:16 इस बात को समझें की पवित्र आत्मा लगातार आपकी मानव आत्मा के साथ मिलकर यह गवाही देता है कि आप निश्चित रूप से परमेश्वर की संतान हैं।

8:17 इस बात को स्वीकार करें की आप मसीह के साथ उसकी महिमा में संगी वारिस तभी हो सकते हैं जब आप उसके दुःखों में सहभागी होते हैं।

2. रोमियों 8:1–17 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

एक मसीही होने के नाते मैं अपनी जिम्मेदारी के दायित्व को बहुत गम्भीरता से लेना चाहता हूँ। इसलिए मैं हर दिन इस बात पर ध्यान देना चाहता हूँ कि मैं किस प्रकार अपने शरीर में मैजूद पापमय स्वभाव के भ्रष्ट कामों को मार सकता हूँ। पवित्र आत्मा की सहायता से मैं इन्हें मार सकता हूँ।

मैं यह याद रखना चाहता हूँ कि परमेश्वर ने योजना बनाई है कि मैं उसकी महिमा की मिरास प्राप्त करने से पहले वर्तमान संसार के क्लेशों से होकर चलूँ। सभी मनुष्यों के समान ही मुझे भी जीवन की सामान्य समस्याओं का सामना करना है। और एक मसीही होने के नाते मुझे उन दुःखों में भी सहभागी होना है जो सतावा के कारण होते है। लेकिन परमेश्वर ने दुःखों की योजना इसलिए बनाई है ताकि मैं भविष्य में उनकी महिमा को साझा करने के लिए तैयार हो सकूँ!

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 8:1–17 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 8:1-17 का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **नीतिवचन 15,16,17 और 19**के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (11) रोमियों 8:1 ।परमेश्वर सर्व-शक्तिमान हैः इफिसियों 1:11-12।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** मत्ती 9:9-13 में **"वैद्य व बीमार"** और मत्ती 5:13-16 में निहित **"पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति"** के दृष्टांत की तैयारी करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।